भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 8 | बुधवार, 26.8.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मवाह

साक्षात स्व-स्वरूप ज्योत के अक्षरमुक्तों

एक बात मैं रोज कहता हूं, लेकिन वह सूत्रात्मक है। सो, कईयों का दिमाग वह स्वीकारता नहीं और इसी कारण वह बात आचरण में नहीं आती; आती भी है तो ऊपर-ऊपर से, लेकिन भीतर से ऐसा आचरण करने की गरज या लालच नहीं रहती। क्योंकि वह बात mind, inner mind और बुद्धि has not accepted अर्थात् उसकी अगत्यता आंतरिक मन और बुद्धि ने स्वीकारी नहीं है।

जैसे, डायबीटिज़ हुआ हो और मीठा खाया करेंगे तो मृत्यु तो आयेगी-इसे मन ने स्वीकार है, तो उस व्यक्ति को लाख रुपया दो तब भी चीनी या लड्डू खायेगा नहीं और कई मूर्ख लोग तो डायबीटिज़ हो, तब भी श्रीखण्ड खाते रहते हैं और मर जाते हैं।

वह बात क्या? तो मैं 1952 से कहा ही करता हूँ कि सामने आए को जीवनमुक्त मान कर दिव्यभाव पकड़ रखकर स्वधर्मयुक्त सेवा कर लो या साथी को निर्दोष मानो, तो बापा जैसे निर्दोष हो जाओगे।

यह बात भीतर से क्यों स्वीकार नहीं पाते? क्योंकि-तुम्हारे दिमाग में उतरी नहीं है। सो यह लेख लिखकर भेज रहा हूं कि-तुम बापा को वच.प्र. 62, के अत्यं. 30 जैसे निर्दोष मानते हो और उनका सेवन करते हो। वह क्या? तो-उनके (पप्पा के) दर्शन करने के लिए भागदौड़ करते हो। बात सुनने के लिए भागदौड़ करते हो।

उनकी हर एक क्रिया जंचती है, उनके साथ प्रीति है, सो उनके स्वभाव भी जंचते हैं। वे सुख-दुःख दें, डाँटें, गुस्सा करें तो भी उन्हें छोड़ नहीं देते व उनका अभाव नहीं लेते और जब वापिस लौटेंगे... तब अहोहो-भाव से सत्कार करोगे।

पप्पा जंचते हैं और निर्दोष माने जाते हैं, वैसे तुम्हारे गुरु, सद्गुरु को भी मानते हो; मतलब उनके भी दर्शन, बात, क्रिया और स्वभाव जंचते हैं। ऐसा तुम्हारा आचरण है तो भी उनके जैसा सुख क्यों नहीं आता?

वजह यही है कि गुरु और गुरुहरि के अल्प संबंधी, तुम्हारे साथीदार साधक बहनों को तुम गुरु और गुरुहरि जैसे निर्दोष नहीं मानते। तुम कहोगे कि हम मानते हैं। हाँ, मानते हो पर बुद्धि से या ज्ञान से। लेकिन भीतर के भाव से मानो तो तुम बापा जैसे निर्दोष हो ही जाओ।

जो-जो योगीबापा जैसा सुख भोगते हैं, उन्होंने यूं अल्प संबंध वाले साथी के दर्शन, बातें, क्रिया और स्वभाव जंचाया और सेवा करा ही करी-चाहे फिर वे

काकाश्री, पप्पा, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब, बा, बेन या ज्योति, तारा, हंसा, देवी जैसे सद्गुरु हों। तो तुम्हारा-साथीदार के दर्शन करके अंतर हंस उठता है?

साथीदार की बात सुनने भागदौड़ करते हो?

साथीदार की क्रिया अंतर से जंचती है?

साथीदार का स्वभाव जँचता है?

दिल पर हाथ रख कर सोचना की साथी मित्रों की क्रिया और स्वभाव जँचाते हो? जुबान से भले न कहो पर अंतर से? यूं सभी साथी के स्वभाव जँचाओ और सेवा करा करो तो जोगी महाराज जैसा ही सुख भोगते हो जाओ कि नहीं?

इसका नाम 'सामने वाले को जीवनमुक्त माना....' जो मंत्र रोज बोलते हैं।

ऐसा आचरण करने जाग्रतता रखें तो तत्काल बा, बेन जैसे सुखी हो जाएं। तो अब तो तुम इस बात को लेकर लग ही पड़े होंगे और बा-बेन जैसा सुख भोगते हो गए होंगे। वर्ना यह बात तुम्हारी बुद्धि में क्या उतरी? करने लगो ना? लाख जन्म के बाद यह बात करे बिना छुटकारा नहीं। तो आज ही क्यों करने ना लग पड़ें? हो-होकर क्या होगा? रोम-रोम में प्रभु बैठ जाएंगे और वच.अत्यं. 27 जैसे सुखी हो जाओगे। ऐसा सुख भोगते हो जाओ-यही अंतर का आशीर्वाद !

तुम्हारे ही पप्पा के जय स्वामिनारायण

✡✡✡✡✡

सरलता का मूर्तस्वरूप – प.पू. पप्पाजी !

करोड़ों धन्यवाद ! गुरुहरि योगीजी महाराज को... जिन्होंने पू.काकाजी, पू. पप्पाजी, पू.हरिप्रसादस्वामिजी, पू. साहेब, पू.अक्षरविहारीस्वामिजी जैसे गुणातीत स्वरूप हमें भेंट में दिए....

उन्हीं में से-अभिमान, आडम्बर या दंभ की लकीर बिना का नम्र, शांत और स्वस्थ मुखाकृति-सरलता का मूर्तिमान स्वरूप-गुणातीत समाज में 'पप्पाजी' के प्यारे नाम से पहचाने जाने वाली, ऊपर से देखने में अत्यधिक सामान्य दिखाई पड़ती-मानवदेह में विचरती असाधारण दिव्यविभूति का प्रागट्य दिन यानि 1 सितम्बर नज़दीक आ रही है। ऐसे भव्य गुणातीत स्वरूपों अपने संबंध में आए जीवों को सेवा देकर धन्य बनाने, दिव्यता का अनुभव कराने, आशीष-कृपा बरसाने के मौके अलग-अलग रूप में स्वयं दे देते हैं।

पू. पप्पाजी-जिनका कल्पना से परे हृदय की गहराईयों को छू जाने वाला प्रेमाल वात्सल्यभरा धब्बा, निर्मिनेष वचनों से बहती करुणा का वर्णन नहीं किया जा सकता... ऐसी विभूति का भगवान से निरन्तर व शाश्वत् संबंध होता है। ऐसी विभूति इस लोक के अनुसार ही खाती-पीती, सोती-हंसती, सामान्य क्रियाएं करती हैं.... अपना सामर्थ्य छुपाने का ही भरसक प्रयत्न करती है, परन्तु पूर्व के संस्कारी एवं मुमुक्ष जीवों को भगवान के मार्ग पर चलाने, पात्र के अनुसार या जहां जरूरत पड़े, वहां अकारण करूणा करके अपना सामर्थ्य बताती भी है। युगपुरुष के जीवन को वैसे शब्दों में बांधना अत्यधिक कठिन होता है क्योंकि वे अनुभव का विषय है, लेखन का नहीं...

मानवमात्र के सर्वांगी उत्कर्ष के लिए खुद के जीवन की क्षण-क्षण का बलिदान देने वाले–प.पू. पप्पाजी ने अपना समग्र अस्तित्व गुरुहरि योगीजी महाराज में विलीन कर दिया... मानवस्वरूप में प्रगट हुए इन युगपुरुषों का स्वयं का जीवन ही अलौकिक प्रकाश, अनोखी रीति-नीति, स्थिति समझाने के लिए ही होता है। पुराने जोगी बताते हैं कि ताड़देव में सारा दिन चहेते व विरोधी-सभी भक्तों की सरीखे उमंग-उत्साह से निर्दोषबुद्धि से सेवा होती थी। 'भगवान के संबंध वाले ही सच्चे संबंधी'–यह बात केवल कहने में नहीं बल्कि स्वयं जीकर पू. काकाजी, पू. पप्पाजी व पू. कांतिकाका ने बताया। सच ! इन्होंने कैसी अद्भुत आत्मीयता की मिसाल रखी... एक बार पू. काकाजी, पू. पप्पाजी के

बहनोई श्री राजीवभाई इन्दौर से आने वाले थे। तो उनका Message आया कि हमें लेने Frontier मेल पर गाड़ी भेजना... पू. पप्पाजी ने मन ही मन सोच लिया कि यह गाड़ी तो योगीजी महाराज की है, सो योगीजी महाराज के हरिभक्तों के लिए ही होनी चाहिए.... जीजाजी को आना हो तो टैक्सी करके आ जाएं। अपनी देह और देह के संबंधियों से अधिक भगवान और भगवान के भक्तों को अधिक प्यारे रखने की आत्मीयता की सही अर्थ में शुरूआत पू. काकाजी, पू. पप्पाजी ने कराई।

दूसरी ओर जैसे गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज हमारी बोचासण संस्था के दो स्तंभ हैं, उससे कोई इंकार नहीं कर पाएगा। उसी प्रकार गुणातीत समाज के विश्वकर्मा पू. काकाजी व पू. पप्पाजी हैं—इस बात को भी हम में से कोई इन्कार नहीं कर पाएगा। अब भले ही कितने ज्योतिर्धर हो जाएं या कितने ही चार-चांद हम लगा दें... पर सच ! पू. काकाजी, पू. पप्पाजी व पू. कांतिकाका के परिवार का साथ ना होता तो आज जो हम गुणातीत समाज देख रहे हैं, उसकी कल्पनामात्र ही रह जाती। उन्होंने ही तो सर्वप्रथम बहनों के कार्य की शुरूआत की... अब तक ऐसी मान्यता अपने समाज में थी कि स्त्री प्रकृति कभी भी एकांतिकभाव को नहीं पा सकती। पर, आज इन गुणातीत स्वरूपों ने इस बात पर सेरे लगा दिए...

पू. काकाजी ने 7 वर्ष की आयु में पू. पप्पाजी को पूछा था कि स्वर्ग क्या होता है? हमें स्वर्ग धरती पर लाना है... स्वर्ग धरती पर लाने की बात—वे तो अक्षरधाम धरती पर ले आए। अक्षरधाम यानि जिसमें पक्षापक्षी, मेरा-तेरा, किसी प्रकार की खींचातानी नहीं होती। स्वभाव-प्रकृति की जड़ता के कारण एक ही खून की दो बहनें भी साथ में नहीं रह सकतीं, जबकि आज विद्यानगर में चार सौ बहनें भी साथ में रहती हैं.... आज इन बहनों द्वारा समाज में कितना अधिक कार्य हो रहा है.... इन बहनों के दर्शन से एक पवित्रता का अनुभव होता है। निःस्वार्थभाव से हर एक संबंध में आने वाले के घर-संसार में सुख, शांति, आनंद देने की प्रार्थना करना... आजकल के युग में आने वाली युवा पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों का सिंचन जो कि करोड़ों रुपए देने से भी नहीं हो पाए वह कार्य आज इन बहनों द्वारा हो रहा है.. अब तक सुना था कि गोपियों के जीवन में जब से भगवान श्री कृष्ण आए तब से उनका जगत खारा हो गया था.. पर आज हम अपनी नजरों से देख रहे हैं कि स्त्री-पुरुष भाव से परे ये बहनें अपने संबंध से दूसरों को निर्वासनिक करें ऐसी एकांतिकी स्थिति को पाई हैं।

इसकी नींव पू. काकाजी, पू. पप्पाजी ही हैं, यह हम कभी न भूलें कि उन्होंने खुद अत्यधिक अपमान, गालियां खाकर हमारे लिए राजमार्ग, फूलों का मार्ग तैयार किया है। रामायण का एक प्रसंग है कि भगवान राम व लक्ष्मण 14 वर्ष के बनवास दौरान जब जंगलों में चलते थे, तब किसी सेवक ने लक्ष्मणजी को पूछा कि—आपके पांव इतने मुलायम कैसे हैं। जबकि भगवान राम के पांव अत्यधिक खुरदरे-फटे जैसे हैं। लक्ष्मणजी ने उत्तर दिया कि असल में भगवान राम ऐसे दयालु हैं कि वे स्वयं आगे-आगे चलकर अपने पांव से सारे काटों का दुःख सहकर मेरा रास्ता साफ करते जाते हैं। इसलिए ही मेरे पांव मुलायम हैं... ठीक उसी प्रकार पू. काकाजी, पू. पप्पाजी ने आज हमारे लिए अकारण करुणा करके ऐसा रास्ता तैयार कर दिया। वह ऋण हम कैसे चुका पाएंगे? अरे ! पूरा गुणातीत समाज भी कैसे चुका पाएगा?

पू. पप्पाजी के करीब रहने वाले या उनके अल्प संबंध में आने वाले हर एक को समय-समय पर उनके रोम-रोम में सांगोपांग प्रभु प्रगटायी विभूति और सच्ची सौम्य प्रतिभा का अनोखा दर्शन हुआ है... अपनी लाक्षणिक ढब में बहुत सरलता से मुक्तों द्वारा कही गई बातों का उन्होंने मार्मिक उत्तर देकर साधना के नए-नए रहस्य, नई-नई सूझ, ठोस सत्य दिए हैं... निम्नलिखित आत्मस्पर्शी प्रसंग उसका सम्यक् दर्शन कराते हैं।

रहस्य

पू. पप्पाजी के पांव के जूते में कचरा भरा हुआ था। वह देखकर सेवक कचरा निकालने जाता-इतने में तो पू. पप्पाजी ने फटाफट जूते पहन लिए। सो सेवक ने कहा 'पप्पा, पांव में यह चुभेगा। लाओ निकाल दूं।'

रहस्य खुल्ला करते हुए पू. पप्पाजी ने कहा 'हम मूर्ति में यदि रहें, तो कुछ भी चुभे ही नहीं।'

कर्ताहर्ता महाराज ही

पू. पप्पाजी के सानिध्य में सभी बैठे हुए थे और प्रश्न-उत्तर चल रहे थे। एक साधक ने स्वयं को आड़े आती मुश्किलों को दूर करने पूछा–'पप्पाजी, कभी-कभी ऐसा होता है कि फलां ऐसा करता है फलां वैसा करता है.....' वाक्य बीच में ही काट कर वात्सल्य उड़ेलते हुए पू. पप्पाजी बोले–'देखो बेटा ! एक काम करो..... तुम्हारी पूजा में जो महाराज की मूर्ति है ना ! वह मूर्ति मुझे दे दो और जो मुक्त यूं वर्तता है–वैसा वर्तता है, ऐसा तुझे लगता है, उसकी मूर्ति तेरी पूजा में रख दे। **क्योंकि महाराज के बदले वह मुक्त को कर्ताहर्ता माना जाता है। महाराज से वह अधिक समर्थ माना गया ना** ! उसे कर्ताहर्ता माना, तो वह ही तेरा भगवान् हुआ कि नहीं?'

जड़ लेकिन चेतन

पू. पप्पाजी एक दिन सुबह पौने छः बजे पधारे। आकर हाथ से इशारा करके लिखने के लिए कुछ मांगा सेवक कागज़-पेन लेने गया। एक मुक्त के पास पू. पप्पाजी का प्रवचन लिखने वाली Rough Book थी। पप्पाजी ने वह मांगी तो वह मुक्त बोला–'पप्पाजी, यह बहुत रद्दी कागज है, दूसरा अभी आ रहा है।'

पू. पप्पाजी ने तथ्य दिया, 'एकांतिक के हाथ में आए वह जड़ भी चेतन हो जाए। तो क्या यह कागज का पैड नहीं बन जाएगा। महाराज यदि ढूंढने बैठे होते तो किसी का कल्याण नहीं होता। लेकिन रद्दी जैसा जीव आए, ऐरे-गैरे आए, जो आसरे आए उन्हें पकड़-पकड़ कर शुद्धिकरण करने ही लगे। समय क्यों गंवाना? हाथ में जो आए उसका कल्याण करने ही लग जाना। सही बात या गलत।'

किसी मुक्त ने कहा–'यदि महाराज पात्रता देखने गए होते तो हमारा नंबर ही नहीं लगता।'

पू. पप्पाजी बोले–'नहीं, मेरा तो लग जाता !'

रोकने पर भी नहीं रूकूँ

पू. पप्पाजी की तबियत सुधार पर थी। पर, एक दिन डॉ. नीलम बहन ने पू. पप्पाजी को विनती करते हुए कहा–'पप्पाजी, आप अभी सुबह छः बजे संधध्यान में नहीं जाओ तो अच्छा। अब भी आप के लिए आराम तो जरूरी ही है।'

पू. पप्पाजी गंभीर होकर दृढ़ता से बोले–'नहीं, मैं जाऊँगा ही। आकाश-पाताल एक हो जाए, तो भी मैं संधध्यान में जाऊंगा। इसमें कोई मेरे बीच आ ही नहीं सकता और कोई इस बारे रोकने नहीं आना। वह तो मेरा जीवन है। उसके बिन तो मैं रह नहीं सकूंगा। महाराज ने यह जीवन दिया है; यह देह दी है; वह उनके भक्तों के लिए ही इस्तेमाल ना कर-उसके स्वरूप में लीन ना हो तो वह किस काम का। मुक्तों के संकल्प से मुझे यह जो जीवन मिला है, उस जीवन का उपयोग भक्ति के लिए नहीं करूं तो जीवन का अर्थ ही क्या? इसलिए मैं संधध्यान और सभा में जाऊँगा ही और उसमें किसी को मेरे बीच कभी आना नहीं।'

भगवान को करने दें

पू. पप्पाजी, सभा हॉल में बैठे हुए थे। डॉ. नीलम बहन ने समाचार दिया कि–'पप्पाजी! डॉ. मेनका को करमसद हॉस्पीटल में सर्विस मिल गई।'

पू. पप्पाजी बोले–'**जब, जिस समय, जिसे जैसा**

चाहिए प्रभु वैसा दे देते हैं। हम भगवान रखते हो जाएं, फिर भगवान हमारी चिंता ले लेते हैं। हम चिंता कर-करके कितनी करेंगे? उसके बजाय भगवान को चिंता करने दे तो? इसलिए हम सब अब भगवान धारते हो जाएं और वह करने भगवान का मनन, चिंतन, स्मृति और कथावार्ता घूमते-फिरते करते रहें।'

इन सभी प्रसंगों का निचोड़ यही निकलता है कि गुणातीत स्वरूपों की यही चाहना है कि हम सब आपस में नाम, आकार, स्थानभेद, जातिभेद, स्वरूपभेद, कालभेद, गुणभेद, भूलकर एक-दूसरे के नज़दीक आएं..... भक्तों के दुःख को अपना दुःख मानकर Share करें.... हर एक को आत्मा के संबंध से देखें। प्रेरक, नियंत्रक, कर्ताहर्ता, सर्वोपरि साक्षात् को ही मानें और प्रभु की मूर्ति धारते हो जाएं। तो हे परम पिता ! ओ साकार गुणातीत स्वरूप ! आप सौ-सौ सालों तक अच्छे स्वास्थ्य से सदेह हमारे बीच रहो और आपके स्वरूप की यथार्थ पहचान कर आपके वचनों पर, आदर्श पर हम चलें ऐसी ही आपके प्रागट्य दिन पर हृदय से प्रार्थना

✡ ✡ ✡

स्वामी की बातें

444. धर्म में रहना, त्याग रखना, तप करना तथा नियम पालने इत्यादि स्वयं की भलाई के लिए व दूसरे मुमुक्षु जीव के कल्याण के लिए है और हमें तो बहुत बारीक बातें मोटी करके समझानी है। *प्र.-5, 231*

445. ज्यादा कुछ करना नहीं है, महाराज को भगवान जानकर उनकी आज्ञा में रहना-सो पूरा हो गया और शास्त्र में इतना ही करने का लिखा है। हम भगवान के हैं, माया के नहीं-यूं मानना। *प्र.-5, 234*

446. इस समय हमारा जन्म हुआ है, वह बड़े भाग्य की बात है। सौ वर्ष पहले या सौ वर्ष बाद जन्म हुआ होता और भले ही समाधि होती तो क्या मिल जाता? ये बातें और ऐसे जोग की बराबर वह नहीं कर पाता। फिलहाल तो धर्म, अर्थ, काम को छोड़कर केवल मोक्ष ही रखा है। यहाँ जिसे गुण नहीं आता और अवगुण आए उसे असुर जानना और अबके तो अवगुण आए-ऐसी एक भी क्रिया नहीं। सहज ही गुण आए, ऐसी क्रिया है। *प्र.-5, 237*

447. लल्लू जैसा साधु हो, उसका इतना तो माहात्म्य समझना कि उसके दर्शन करने से पाप जल जाएंगे। *प्र.-5, 238*

448. भगवान और साधु तो दो पल में कल्याण करें, ऐसे दयालु हैं लेकिन इस बात को हमें ख्याल पड़ता नहीं। सो संग और रुचि अच्छी रखना और न पहचान पाओ तो विश्वास रखकर कथा-कीर्तन करके जिंदगी पूरी कर देना। *प्र.-5, 239*

449. दसों दिशाओं में घोड़ा घुमा कर यज्ञ करें और कोई उस घोड़े को बांध ले तो विघ्न के कारण यज्ञ पूरा नहीं हो पाता व उसका फल मिलता नहीं। सो अपने घर के आंगन में घोड़ा घुमा कर यज्ञ पूरा करके फल ले लेना चाहिए। फल तो यज्ञ है और घोड़ा घुमाने से तो कीर्ति बढ़ती है ऐसा है..... *प्र.-5, 242*

450. वासना तो यूं टले कि हमारे सत्संग के सभी बड़े-बड़े साधु इकट्ठे हों और श्वेतद्वीप जैसा धाम

हो व ब्रह्मा के कल्प जितनी आयु हो, तो सभी से एक-एक, दो-दो लक्षण सीखें; वर्ना तो साधु के सभी लक्षण एक में हो, उसका संग करे तो वासना टल जाए। *प्र.-5, 243*

451. 'आज्ञा में नहीं रह पाएं' तो प्रार्थना करके छुटकारा हो जाए, परन्तु उपासना का भंग नहीं होने देना। आज्ञा का प्रकरण कड़ा चलाया है और आज्ञा आए कि गिरनार पर्वत के भीतर से पार उतर जाओ–ऐसी आज्ञा पालनी तो नामुमकिन है; परन्तु आज्ञा का पालन करने गिरनार के पास जाकर माथा टेकना और फिर मार्ग हो तो पार निकल जाना। वर्ना माथा टेक कर वहां बैठे रहना। यह देखकर भगवान राजी हो जाएंगे। *प्र.-5, 244*

452. कलयुग में तप हो पाए ऐसी देह नहीं, इसलिए तप करने का लिखा नहीं है। **'कलौ कीर्तनात्'** कीर्तन, भजन करने से पाप जल जाते हैं और चलते-फिरते स्वामिनारायण का भजन करने से पाप जल जाते हैं। *प्र.-5, 248*

453. सत्संग करे उसके सिर से काल, कर्म और माया का डर टल गया। उसके रक्षक भगवान हो गए.... *प्र.-5, 249*

व्रतोत्सवसूची

1)	दि.	1.9.95	शुक्रवार	प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी महाराज का प्राकट्यदिन
2)	दि.	5.9.95	मंगलवार	जलझीलनी एकादशी, व्रत
3)	दि.	12.9.95	मंगलवार	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध
4)	दि.	19.9.95	मंगलवार	श्रीजी महाराज और ब्र.स्व. जागास्वामी का श्राद्ध
5)	दि.	20.9.95	बुधवार	एकादशी, व्रत, ब्र.स्व. योगीजी महाराज का श्राद्ध
6)	दि.	21.9.95	गुरुवार	ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का श्राद्ध
7)	दि.	22.9.95	शुक्रवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का श्राद्ध
8)	दि.	23.9.95	शनिवार	ब्र.स्व. भगतजी महाराज का श्राद्ध
9)	दि.	25.9.95	सोमवार	नवरात्रे प्रारम्भ

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053